

श्रीयाम्कामचा ॥ १॥ १॥

श्रीगणेशाय नमः श्रीसरस्वतीय नमः श्रीगुरुभ्यो नमः

श्रीकल्याणाय नमः लैकवेला काची कुसरी चित्रे की ही

ली होली वी ली वरी ॥ शोकः साकुरवी ॥ हांस मयरी ॥

नान्तापरी चे वी हंगम ॥ १॥ आणी दाहा ही आ वला

ली ही लेसास ली ॥ त्या त्या आ वलारा चोर छी ली ॥

आक्षी यु गी जे जे वृत्त ली ॥ आक्षी सहर चरके

श्वरा ॥ २॥ ये कवी सरचर्मा पालका ॥ द्वारका आणी गो

कुका ॥ दादशाली गं आ चक ॥ आणी ली थै स क

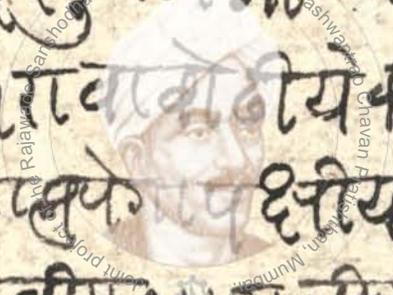
की के ॥ ३॥ ये से लेची चित्री चित्री आ रंग नाना वर्णप

①

वीत्रा। सुरग आसे लख लखी।। अणी लगद सुव
णचि।। ४।। ऐसी चीत्रे रोभीवत। वेला क प्रवेश करी लेये।।
पुसाव। हारीत। तथा मधेनी घाला।। ५।। परं वं शजुनी
करी करवा का। ते देखु नीप झीपी बाळा। हा सली वेला का
खद खदुनी गाद्या।। वाको वीय करेखा। प्रथम हासे
आले देखा। राजा सुके। पक्षीया सुरेखा। काही क
था प्रसंग सांगावी।। ६।। रात्री जाल आसे दुधरी। नी
द्रा भुल होत आसे शरीरा। तव पक्षी बोळ उतर।। ते
कासे ककी का।। ७।। राया अ। नी अ। सले जया चधरी।।
त्याची आरुना पाहीजे आचधारी। मग कथा सवी

१॥

२



रत्ता रीग संगे न राया ॥ ९॥ लो आ मुचा श्रेष्ठ स्वामी ॥

जास लो त्याच्या गृहा श्रमी ॥ आसा वीरही लजा श्री

न सांगो राया ॥ १० ॥ वीक्रम लपे गारे कवचन ॥ लेही

धरी ले आसे मै न्य ॥ हा राये बो लणे नो ही नी वणि ॥

वृ ल जाण धरी ले आसे ॥ ११ ॥ पृष्टि क्षणे राया आ

मचा लो चीरंग ॥ आसा वीरही लन करी प्रसंग ॥ ल

वसर व्यावेशा आ गव गण ॥ लप ली वारि जी आरना

हेणे ॥ १२ ॥ कैसे आ पुवी रै को बोला बोल बोल लो के

लु को ॥ कोण जाणे कोण वी वेका ॥ कथा संगे ल

आ पुवी ॥ १३ ॥ लो उं द्या लजी आ सो मी टी ॥ परी उं

तरि चटपटी ॥ जीवधरनीयाकंटी ॥ लणेरधो
 ③ कथासंगवहीला ॥ १४ ॥ रेखाचोखी दुसरी ॥ हासणे
 बो लणेवनावरी ॥ कथापरीसावीचोरतापी ॥ येक
 २ ॥ चीलदेउनी ॥ १५ ॥ पदरी लणेरजीविवेरावधान ॥
 ऐकावेयेकचीलकचमन ॥ जेजालेभद्रावलीक ॥
 धन ॥ रायाभद्रशेनमरीसा ॥ १६ ॥ नगरआली
 वीरलारे ॥ वीरलीणियागोपुरे ॥ रत्नादीकवे
 कुरे ॥ सुरवेनांदली ॥ १७ ॥ राजाआसेहारीभक्त ॥
 गारिवासणाप्रलीपाकक ॥ सुरवीआसेहेराको
 क ॥ टान ३४ मीरिगागध ॥ १८ ॥

वक्रमचा प्र॥ ७॥

आसलीसककसपहापरिनउलधेवेदमय
हो॥ साधुजनाचीनकरीनीहा॥ कवपीयेकलीपू
राज्यफरोआलीनीगुलीपपरीजीवोआसेरवं
सी॥ पोदीनाहीसंतलीपुत्रफळाची॥ २०॥
तयाकारणेकेलनावायास॥ धर्मकेलेव
हवस॥ धणीपाहीजनायास॥ आपुलेबधा
पक्ष्यवोनी॥ २१॥ ऐसेलथासीराज्यकरीला॥
मनीवाहेपुत्राचीजावस्ता॥ पुढेकैसीकथा॥
तेपरीसा॥ जीवाया॥ २२॥ ऐकाकाणीयेकसुदीनी॥

38



राजा बैसला होला सीकासनी ॥ लवही जणा
लाहार के हुनी गना वल पाचे सुवी दु ॥ २३ ॥
५) लोच लवे देसंपुगी ॥ लोच लवे सा सुभाननु ॥ स
कक शार श्रीजी पुकी ॥ लवच चद्र मडील ॥ २४ ॥
७) लोदेखे नीही जण ॥ राजा करी स ॥ हंगी ३
नमरकार ॥ लोच लवे सा सुभाननु ॥
या बैसा रचा मीया ॥ २५ ॥ सीकासनी बैस
उनी ॥ धारी कन करना ॥ गंध धुप ही पवा
हे सुमने ॥ लोच लवे देसंपुगी ॥ लोच लवे सा सुभाननु ॥

श्रीवीक्रमचरीत्रप्रभा ७॥

राजाजनासमेत ॥ २६ ॥ वैराग्यनीसुरवासनी ॥

दुत्रचामरेनृपगायनी ॥ ऐसाप्रवेशलारतु

कांगणी ॥ वाजं तरीगगनगोजी ॥ २७ ॥ उचारमादी

धरलीलोकारनरसात तवलेआलीराजकांता ॥

चरणीटेवोनीगामकां करजोउनीउभीराहे ॥

२८ ॥ हीजल्पेपुत्र ॥ भंवतु ॥ पुढतीधाणीदं

उवलु ॥ लणवचनस्योयथाथुकेलापाहीजे ॥

स्वामीया ॥ २९ ॥ पुनरपील्पतथासु ॥ तुसापुरे

तवोमनेरथु ॥ तुपजसीनीश्रंत ॥ पुतनपुत्राका

३४



Digitized by eGangotri Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

रणे ॥ ३० ॥ लवजाती प्रोजन वेळा ॥ अरोगण जा
 ली सकळा ॥ लोखां लदे उनी सपरी मळा ॥ ली वीली
 जाती आगी ॥ ३१ ॥ दी जलपे गभुपाळा ॥ लोपे पा
 ४ ॥ वसी पुत्र फळा ॥ ली लसा का मळा सकळा ॥ स
 कळ संमृधी पावनी ॥ राजलपे जी राषे स्वरा ॥
 ५ ॥ कृपा लुवा गुण सांगे ॥ मज जे जे आह्ना करा ॥
 ते ते मरत की वंदी ना ॥ ३३ ॥ सुमुह तिसुही नी ॥ म
 उप उर ची लारा ज आंगणी ॥ मुळे पार वीली रा
 या ॥ लारुनी ॥ देशो हेर लियापे ॥ ३४ ॥ टार टारि गु
 डीया ॥ लो रणे ॥ पला का शक कली नी राणे ॥

कुकुमेकस्वुरीउधकणे॥ राउरंगमाळावीदीसीप
उथा॥ स्थळीस्थळीबागडेनाचती॥ नृत्यंगनानृ
त्यकरीती॥ पुराणश्रवणवीसुलीगहारीकथाकरी
रुहीहारीदास॥ ३६॥ बहुसमीका लेवसंब्रीदं॥
जेकावेदमोलीप्रसिद्ध॥ जेसीगुगवलीयाचंद्रवी
बा॥ रातसहस्राची॥ ३७॥ नामादेवलामंत्री॥
येकनवग्रहाचेजपकरीती॥ येकउगात्रीस्थाप
नाकरीतो॥ आचार्यअपुणासीवीधु॥ ३८॥
राजेआलेसकळ॥ देशोदेशीचेभुपाळ॥ लेण

(58)

दाटले पुं वळ ॥ मंडप टारि टारी ॥ ३५ ॥ वीधी युक्त
रची ले कुंडासी ॥ होम द्रव्याच्या केळारासी ॥ दृ
लमंधु पेय कुंभंसी ॥ गणी तना ही परी येता ॥ ४० ॥

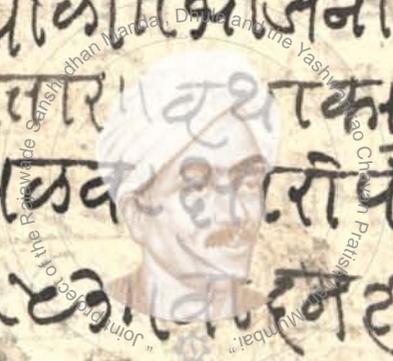
७

समीधा आणी ल्या रमसी ॥ जे जे या सी आहे
प्रीती ॥ त्या त्या टेवी ल्या आसती ॥ कुंडा र भोष
या ॥ त्या पै ॥ ४१ ॥ ऐसे न व रानी कमी ली ॥ दाहा वेदी व या ॥
सी हु लारान आका नी ले ॥ आवदान दे लाजा
ला ॥ सुर वरा सी पै ॥ ४२ ॥ आवदान दे ली मंत्रं युक्त ॥
ब्राह्मण आनं दे गर्जित ॥ आग्नी आसे धडा जी ला
उवाळा आका सी ला गती ॥ ४३ ॥

श्री श्री क्रम च ॥ १ ॥

होले ॥ श्री लुका करी दान ॥ ७ ॥ किउ जव होय द
मा वकी प ल व पा करी धी जा की सक की ॥ मग
करनी या ठां द्यो की ॥ १ ॥ जना सी बैस ले ॥ घा का
ये सा गो नी वी र सार ॥ वृथा का वा गं द्या सी प सा
६१ ॥ प चं ११ द र व ल व र ॥ १ ॥ रो र्क र ॥ ती न से सा
टो म त्र शा र वा ॥ १ ॥ वा र्ज न दु द्ध जी रे सा की ॥
वा स फ को दा से परी म जी ॥ कृ थी को ल का ची
नी मी की ॥ आ णी ल व ण शा र वा तु ल म ॥ १ ॥
नारी ती वा डी ती पर व डी ॥ पा प उ स उ या कुर व डी ॥

6A



घृतेवादीलीलोपकडी।। मंगसोडीलीब्रह्मपणि।।

७) ॥ ॐ ॥ जेजयारचीहोली।। लेआणुनीसखेवादीली।।

वरीइहीभूतजेवीली।। उरालीरुचीकरानीया।। ॐ ॥

७) ॥ सकळजेवीलात्रुपुजते।। उतरजापोरान्धेज्जी

जांचवते।। बैसकारतमघातते।। जेराजे ७ ॥

बैसकेचेउतम।। ॐ ॥ जेथेजाताबैसकार।। सक

ळराजेआणीदीजयर।। लांबोळदेतीहाउपेधर।।

लांबोलीपरीमळद्रव्ये।। ॐ ॥ हारदासकरीली

गायना।। नृसामानाचलीमहना।। सुरवीकेलेया

चकजना।। दामभामेदुनीया।। ॐ ॥ बक्षणासी

३५

दीधली दृष्टणा ॥ करणे पुनी करती वी ज्ञापना ॥
लेहेली मंत्राक्षरासंपुजा ॥ ६० ॥ मंत्राक्षरासंपुजा ॥
॥ प्रवेशालानी जभुवनी ॥ श्रीसप्तवेतदोघेजणा ॥
कनकपरीमजी प्रोत्तन केले ॥ ६१ ॥ लिफे ये आव
शेरीारात्रीकमली येन वहीरा ॥ राजे उग्रयतानी
॥ करी पत्तोची ॥ ६२ ॥ महाला ॥ ६५ ॥ प्रभातसुरी
दुयजाला ॥ सकळसी वसकार दीधला ॥ समस्ता
नेरचवाहीला ॥ वस्त्रेव्यवंकार भुराणे ॥ ६३ ॥
राजे आवधे अज्ञानागत ॥ १२ ॥ रायवनीद्या

ला बोळवील ॥ पर स्वरे आग्रह करीली ॥ मग न
गरासी आला ॥ ६४ ॥ ब्राह्मण रसी दीधली पाटव
णी ॥ कर जो उनी करी वी नवणी ॥ क ह लेली
मज लागेनी ॥ येथ करी कृपा केली ॥ ६५ ॥ सुवा
८ ॥ द्यक्षणे गाराया ॥ अरु न दरी जा गुजा पुली याय ८ ॥
या ॥ येर क्षणे जी रानया ॥ मज रनाथ केले ॥ ६६ ॥
जैसे कसे पांडुवासी ॥ रदरी लेना नारायासी प
कीर घुनाथ वी भीरणा रसी ॥ चीरं जीव लका
नटप कला ॥ ६७ ॥ तैसा तुली गुणी ६८ ॥ मज

श्री श्री कृष्ण चण्डिका

84

लानी वोळ लासी क्षीरा क्षीरा श्री ली कोली
 सी क्षीरा पुत्र फळा चा। ६८। लुकी सदा ल
 गा वी श्वर। लुसा क वयासी न क के पार।
 क्षीरा पा हा ला जी माता पुरा। मा व का जी भे
 ट ला सी। ६९। क ल्प रा दे क ल्पि ली फळे
 ची ल मणी दे ची ली ल स क व। लै स लु व
 वा ट वी ला वें ल। मा सी या वै रा चा। ७०।
 ऐ सी र सु ली क र नी। म ग दे ला ला लु ग
 जी ले पी ग ना ना व र त्रा च्या आ षा र णी। गै र

वी ला र सी रा वो ॥ ७१ ॥ दी ध ले लुरे गर था ॥

जानी घाला बोळ वील ॥ सरसो हाणे रा हे य

१ था थी ॥ बहु ल दुरी आ ला आ स री ॥ ७२ ॥

आ ती प्री ती आ द रा ॥ घा ती र सां द्ये म क म

स्फा रा ॥ पु ढे गे आ म के र रा ॥ रा वो मुर उ ला व ९ ॥

१॥ ग रा सी ॥ ७३ ॥ म म रा ती ला रा णी सी ॥ आ ट

मा स भर ले ती सी ॥ आ टं गुळे के ले मो सा ॥

ये सी ॥ पु णे व मा स भर ले ॥ ७४ ॥ वै शा रे व

रु मा ७३ प्र सु व ला ती रा णी सी ॥ प्र भा ल स

म यो दी न का रा सी ॥ उ द यो हो व ने के ला ॥ ७५ ॥

श्रीवीरकर्मच॥ प्र०७॥

मणालो जो पुत्र जा ला ॥ रावो मोहो हो थोर के लगे नी
राणा घावो पीये ला ॥ हाने ही धली ब्रह्मणा सीम ७५ ॥
ऐसे बारा ही वस कर्म ले ॥ तेरा वेदी वसी वार से के ले ॥
पाळणा घालो नी नावडे वी ले ॥ सुर शे न हणवो नी ॥
॥७७॥ देह ही वसे वांढे ला ला ॥ पाचा वरा राचा पु ११५
पजि ला ला ॥ राये पदा घाले ला ॥ पं डी सापारी साळे सो ॥
॥७८॥ धुळ उचारे वेदाची पुणजा ली ॥ मग धनु
वी द्या उचारे भ्यासी ली ॥ ले ही पुणरे चाधी ली ॥ मग
वी वा हो उचारे दरी ला ॥ ७९ ॥ रासी रो उ रावरा पे भर

११५

११५



लीं पुरी ॥ आता तुलम वी चारानो वरी ॥ मग बोला
उनी मंत्री ॥ सांगूला जाला रावो ॥ ८० ॥ कोणी ये के रा
याची कन्या ॥ उपमा दीजे मदन भायरी ॥ पुढे सपव
णविया ॥ काय कारण जसे ॥ ८१ ॥ प्रधाने राध्य
नी श्रियो केला ॥ रायसी नामा चार सांगी लला ॥ ८२ ॥
नाचा नी श्रियो केला ॥ वेरा राय ह्युध १२ ॥ ८३ ॥ के
ली लग्नाची रा मोग्री ॥ बराठ मी काळे भयवग्री ॥
दोघा सर पाडयथा सोनी ॥ लग्न सीधी जाली पौ ॥ ८४ ॥
चार दीव सक मी लीया वरी ॥ वहाड जाले भद्रपु
री मल ह्युमी पुजन धर भरी ॥ आली आनंदे करानी

या ॥ ८७ ॥ ऐसे सुर वे राज करी ला पु पु के री व ल ली
कथा ॥ नी श्रि क करनी या चीला ॥ प री थे सा जी रा या पु
॥ ८८ ॥ को पी ये के दी व सी ग राजा वी चारी ची ला सी
पा हा वी प री ध रा पु त्रा जी के सा सु र जा त्त आ से ॥
॥ ८९ ॥ त या चा के ल च मे का भ रा रा स वे दी ध ल ॥ १०४
आ नी ल प री च बा स ॥ पु र सु र रो न कु म रा ॥ जा प
ण पा टी सी जा त्त आ स ॥ ९० ॥ दो जी फे री ली वा जी ॥
वी र श्रि के करी ली ने ज बा जी ग बी था ढी या ट की
ही स ह जी ॥ चो ढे दो ली प र स् प र ॥ ९१ ॥ ऐ स
र वे ल ल ॥ रा वी क व ल क पा हा ल ॥ त व से र

107

108



नीधाला आकर समा ल जाकी मधुनीया ॥ २५ ॥
लयाचा पाटी लाग केला ॥ कीर येक येकराहीला ॥
राजकुमार येकला ॥ परी न सोडी पाटी लाग ॥

11

११ ॥ २० ॥ रायासी सोमली दुल ॥ हणली सुररेना ॥ ११ ॥

चापरा क्रम बहु ल ॥ अहरेन जीवी हा राषमा ॥
नील ॥ पुत्र दुरेज ॥ लो ग वी न मिय ॥ राज पुत्र
न सोडी सोरा ची पाटी ॥ लाग ल जा ल से दुरी ॥ रकु
टी ॥ बहु ल जा ला ही पुटी ॥ तृ रा थोर लागली ॥ २२ ॥
या रा ही धाव ला ॥ अग ला ॥ तृ रा का ल ही सो लाग ला
सोर नी धनी गेल ॥ दर द क ट आ र क र नी या ॥ २३ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com